Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 SHISRRJ | Volume 3 | Issue 5 | ISSN : 2581- 6306

नैतिकता और मानवीय मूल्य
(संस्कृत साहित्य और आधुनिक परिप्रेक्ष्य में)

डॉ0 रुचि पाण्डेय
एसो. प्रोफे. संस्कृत, आगरा कॉलेज, आगरा,उत्तर प्रदेश।

Article Info
Volume 3, Issue 5
Page Number : 352-354
Publication Issue :
September-October-2020
Article History
Accepted : 20 Sep 2020
Published : 30 Sep 2020

सारांश– बिखरते हुए मानव–मूल्यों को समय के प्रवाह के साथ सहेजना होगा। इसका दायित्त्व सर्वप्रथम माता–पिता पर समाज के उस प्रबुद्ध वर्ग जिनमें शिक्षक, चिकित्सक, अभियांत्रिक, साहित्यकार और विद्वान पर भी हैं। जिनके द्वारा एक स्वस्थ पीढ़ी का निर्माण हो सकता है।

मुख्य शब्द–संस्कृत, साहित्य, नैतिकता, मानवीय–मूल्य।

उपरोक्त शीर्षक की प्रासंगिकता, धार्मिक, राजनैतिक, शैक्षिक, सामाजिक आधार पर जानी जा सकती है जिसके लिए समय की धुन्ध को हटाने के लिए तेजस्वी सूर्य की किरण ही, चिन्तन को प्रकाश बिन्दु प्रदान कर सकती है, क्योंकि नीतियाँ और मानव मूल्य काल साक्षेप होते हैं और समय के साथ परिवर्तित होते रहते हैं, इस कारण हमें वैदिक काल की ओर लौटना होगा, तभी सनातन मूल्यों का सूर्य, विषय को प्रकाशित करते हुए दृष्टिगोचर होगा। वैदिक काल के ज्ञान को प्राप्त करने के लिए संस्कृत भाषा की विशेषताओं को जानना होगा।

संस्कृत भाषा को सर्वोत्कृष्टा, धार्मिकता तथा प्राचीनता के कारण देववाणी और सुरभारती नामों से अभिहित किया गया है। प्राचीन ऋषियों ने मानवकल्याण के लिए इसी भाषा में उपदेश दिए हैं जो अद्यावधि उपलब्ध हैं।

संस्कृत भारतीय लोकाभ्युदय एवं परमश्रेयस का साधक है। नीतिशास्त्र, राजशास्त्र एवं अर्थशास्त्र के ग्रन्थ भी इसी महनीय भाषा में लिखे गए हैं।

इस साहित्य के दो रूप हैं :– वैदिक साहित्य और लौकिक साहित्य। वैदिक साहित्य, जहाँ भारतीय जीवन की धार्मिक–सहिष्णुता, आशावादिता, आध्यात्मिकता, सत्य और शाश्वत आनन्द प्राप्ति का प्रेरक है, वहीं लौकिक साहित्य में भी चाहे काव्य हो या नाटक, आख्यान हो कथाऐं, भारतीय संस्कृति का उदान्तरूप, तप, त्याग, दया, उदारता, वीरता ओजस्विता, दानशीलता, धर्मशीलता आदि गुणों से विभूषित है। रामायण और महाभारत जो लौकिक साहित्य के उपजीव्य ग्रन्थ हैं, इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। इन्हीं उपजीव्य ग्रन्थों से अपने ग्रन्थ की विषयवस्तुओं को लेकर कालिदास आदि कवियों ने आधुनिक संस्कृत साहित्य की वृद्धि करते हुए, मानवीय मूल्यों को स्थापित किया। रामायण में जहाँ मानवीय मर्यादित कत्त्व्य व्यवहारों तथा शिष्टाचार का उल्लेख है, वहीं महाभारत में कौरव–पाण्डवों के युद्ध के अतिरिक्त धार्मिक, नैतिक, सामाजिक मान्यताओं का भी उल्लेख किया गया है।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

'श्रीमद्भगवद्गीता' में जहाँ अर्जुन, युद्धक्षेत्र में अपने सम्बन्धियों को देखकर युद्ध से विमुख होते हैं, वहीं दूसरी ओर कृष्ण धर्म का उल्लेख करते हुए, उन्हें युद्ध के लिए प्रेरित करते हैं कि 'अधर्म की रक्षा' तुम्हारा कर्म नहीं हैं। सत्य सदैव धर्म के साथ रहता है और वहीं विजय सुरक्षित है।

"यतो धर्मः ततो विजयः"

शस्त्र उठाकर अपने कर्त्तव्य का निर्वाह करो, इससे राज धर्म, क्षत्रिय धर्म, मानव धर्म, पति धर्म सभी एक साथ संरक्षित हो जायेंगे।

परिवार से लेकर राष्ट्र तक के जीवन को प्रकाशित करने वाले पशु–पक्षियों के उपारव्यानों द्वारा स्थान–स्थान पर भारतीय संस्कृति के मूल्यों को वर्णित किया है (पञ्तन्त्रम्, हितोपदेश) यथार्थ में इन महनीय ग्रन्थों में भौतिक जीवन की निःसारता को दिखाकर, मोक्ष साधना की ओर उन्मुख किया गया है। राजनैतिक परिप्रेक्ष्य की दृष्टि से तत्कालीन समाज में, पुरोहितों और पण्डितों का आदर था। समाज में ऋषि–मुनियों पर अटूट श्रद्धा थी। समाज का प्रत्येक वर्ग, मानवीय मूल्यां के उत्थान में प्रयासरत था। फलतः ये ग्रन्थ ऐतिहासिकता की दृष्टि से कम, धार्मिक एवं नैतिक काव्य के रूप में अधिक प्रसिद्ध हुए।

धर्मे अर्थे च, कामें च, मोक्षे च भारतर्षभ।
यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित्।।

'पुरुषार्थ चतुष्ट्य' की उपलब्धि के लिए महाभारत से बढ़कर दूसरा ग्रन्थ नहीं। मानवीय मूल्यों की दृष्टि से पूज्यजनों में श्रद्धा, भक्ति, अनुराग, आज्ञापालन, कर्त्तव्यपरायणता, वचनवद्धता, सेवा, सन्त्व, त्याग, दान, परोपकारिता, दया, निष्काम कर्म, ऐसे नैतिक आचरण हैं, जो हमें उच्चता की ओर ले जाते हैं।

इन बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए, भारत के सांस्कृतिक महत्त्व की दृष्टि से यज्ञ संस्था, वर्ण व्यवस्था, कर्मसिद्धान्त, स्वतन्त्रता, राष्ट्रीय भावना, कालमहिमा, धर्मरक्षा, कर्त्तव्याकर्त्तव्य विवेचन, दण्डनीति, राजनीति, राजधर्म के माध्यम से ही नैतिकता और मानवीय मूल्य स्थापित कर पायेंगे।

1. यज्ञ :– यज्ञहवि का प्रेक्षषण मात्र ही नहीं है, अपितु मानवों एवं देवों के मध्य का सम्पर्क सूत्र है, परस्पर कल्याण साधन का एक मात्र साधन है। महाभारत शान्तिपर्व में कहा गया हैः– 'यज्ञाअजा प्रभवति'

2. वर्ण व्यवस्थाः– आर्यों ने 'साम्यवाद' के सिद्धान्तों को व्यवहारिक रूप देने के लिए इस प्रकार की व्यवस्था को बानाया। पाश्चात्य तत्वज्ञाता प्लेटो 'रिपब्लिक' नामक ग्रन्थ में इसी आधार पर समाज का विभाजन किया है।

'गीता' में कृष्ण ने कहा हैः–

चातुर्वण्यम् मया सृष्टं गुण वर्ण विभागशः
तस्य कर्तारमपि मां विद्वय कर्तारमव्ययम्

अध्यात्म तत्वः– इन्द्रियों का वशीभूत मानव पशुवत् आचरण करता है। इसके लिए आवश्यक है, हम इन्द्रिय दमन कर साधक बनें तथा मोक्षमार्ग की ओर अग्रसर हों।

धर्मः– धर्म की रक्षा, काम, भय, लोभ के वशीभूत होकर नहीं करनी चाहिएः–

'न धतुंकामान्भयन्नलोभात्'

भर्तृहरि द्वारा रचित 'नीतिशतकम्' एक व्यवहारिक ग्रन्थ है जिसमें जीवन में, समय, समय पर आने वाली परिस्थितियों का समाधान है। *'परोपकारं सतां विभूतयः शठेशाठ्यं समाचरेत्'* इसका प्रबल उदाहरण है।

बिखरते हुए मानव–मूल्यों को समय के प्रवाह के साथ सहेजना होगा। इसका दायित्त्व सर्वप्रथम माता–पिता पर समाज के उस प्रबुद्ध वर्ग जिनमें शिक्षक, चिकित्सक, अभियांत्रिक, साहित्यकार और विद्धान पर भी हैं। जिनके द्वारा एक स्वस्थ पीढ़ी का निर्माण हो सकता है।

अनुक्रमणिका

1. संस्कृत साहित्य का इतिहास – डॉ0 चन्द्रशेखर पाण्डेय
2. संस्कृत साहित्य का इतिहास – डॉ0 जयकिशन प्रसाद खण्डेलवाल
3. रामायण –वाल्मिकि
4. महाभारत –वेदव्यास
5. श्रीमद्भगवद्गीता – गीता प्रेस
6. नीति शतकम् –भर्तृहरि
7. रघुवंशम् – कालिदास